(Functions or objectives of the Gold Standard)

आधुनिक स्वर्ण-मान के निम्नलिखित दो प्रधान कार्य अथवा उद्देश्य हैं:

1. सर्वप्रथम तो यह देश की मुद्रा के परिमाप को निर्धारित करने का एक तरीका है: ⟶ स्वर्ण-मान के अंतर्गत देश की मुद्रा की राशि स्वर्ण पर आधारित रहती है।

स्वर्ण के बने हुए सिक्को का प्रचलन नहीं होकर पत्र-मुद्रा का प्रचलन रहता है, तो साधारणतया पत्र-मुद्रा को जारी करने के लिए स्वर्ण के आड़ की आवश्यकता पड़ती है।

देश मे मुद्रा-सम्बन्धी अधिनियम मे इस प्रकार की व्यवस्था पायी जाती है, जिसके अनुसार पत्र-मुद्रा जारी करने के लिए एक निश्चित मात्रा मे स्वर्ण को आड़ के रूप मे रखना अनिवार्य होता है।

प्रथम विश्व-युद्ध के पूर्व ग्रेट-ब्रिटेन मे बैंक ऑफ इंगलैण्ड बिना स्वर्ण की आड़ के पचकरोड़ पौंड तक का नोट जारी कर सकता था। संयुक्त राज्य अमेरिका मे फेडरल रिजर्व बैंक द्वारा जारी किये गये कुल नोटो के 40 प्रतिशत के बराबर स्वर्ण प्रतिभूतियों को आड़ के रूप मे रखना अनिवार्य था। अन्य देशो मे भी प्रायः इसी प्रकार की व्यवस्था की गई थी।

देशो मे केन्द्रीय बैंको के नोट जारी करने की शक्ति सीमित हो जाती है।

Scanned with CamScanner

केंद्रीय बैंक इन नियमों का उल्लंघन किये बगैर ही अपने स्वर्ण कोष से अधिक मात्रा में नोट नहीं जारी कर सकते।
स्वर्ण-मान का आंतरिक पक्ष या राष्ट्रीय या आंतरिक स्वर्ण-मान या स्वर्ण-मान का आंतरिक पक्ष भी कहते हैं।
प्रधान उद्देश्य देश में मुद्रा की मात्रा को नियंत्रित कर मुद्रा के आंतरिक मूल्य को स्थायी बनाना है।

2. स्वर्ण-मान विनिमय दर को स्थायी बनाने का भी एक साधन है: ⟶

स्वर्ण मान का दूसरा प्रधान कार्य अथवा उद्देश्य विनिमय दर को स्थायी बनाना है। विनिमय दर का स्थापित्व विदेशी व्यापार को प्रोत्साहित करने के लिए निहायत आवश्यक समझा जाता है।
अस्थायी विनिमय दर से सदा विदेशी व्यापार में लाभ अथवा हानि की आशंका बनी रहती है स्वर्ण-मान का प्रधान उद्देश्य विनिमय दर को स्थायी बनाना होता है।
स्वर्ण-मान के इस पक्ष को अंतर्राष्ट्रीय स्वर्ण-मान कहते हैं।
स्वर्ण-मान में विभिन्न देशों की मुद्राओं को विनिमय दर उनमें निहित स्वर्ण की मात्रा के अनुसार निश्चित होती है।
यदि 1 डॉलर = 1 औंस स्वर्ण और 1 रुपया = 1/4 औंस स्वर्ण तो रुपये एवं डॉलर की विनिमय दर 4 रुपये = 1 डॉलर होगी।

Scanned with CamScanner

Date
Page

स्वर्ण - मान के अंतर्गत रुपये एवं डॉलर की यही विनिमय दर होगी।
यह दर लगभग स्थायी होगी।
भारत मे डॉलर की मॉंग बढ़ जाती है जिससे भारतीय व्यापारियों को एक डॉलर के बदले मे पॉंच रुपये चुकाने पड़ते है तो अमेरिका मे भुगतान डॉलर के रूप मे नही करके यहॉं स्वर्ण खरीद कर उसे अमेरिका भेज देंगे।
डॉलर की मॉंग स्वयं कम हो जायेगी और विनिमय दर 4 रुपये बराबर = 1 डॉलर के हो जाएगी।
अंतर्राष्ट्रीय स्वर्ण - मान मे विनिमय दर मे परिवर्तन भी होता था तो वह स्वर्ण - आयात एवं स्वर्ण - निर्यात के खर्च तक ही सीमित रहता था।
देश की मुद्रा की विनिमय दर मे स्वर्ण प्रमाप के अंतर्गत दो स्वर्ण - बिंदुओ के बीच परिवर्तन हो सकता है।
प्राविधिक दृष्टि से स्वर्ण - प्रमाप एक ऐसा तरीका है जो बात को निश्चित करता है। विदेशी विनिमय - बाजार मे किसी मुद्रा की मॉंग एवं पूर्ति सदा बराबर होगी या दोनों मे इतना अधिक घट - बढ़ नही होगी। विनिमय की दर मे 1 प्रतिशत से अधिक का परिवर्तन हो सके।